लक्ष्मी नारायण अग्रवाल

रोटी का हक

बस जब सिकन्दराबाद स्टेशन से चली तभी खचा खच भरी हुई थी। बाहर लटके हुए यात्रियों के बोझ से एक तरफ झुकी जा रही थी। चलते समय तो ऐसा लगता था कि पायदान सड़क से अब छुआ, तब छुआ। सूर्यान्श को आबिड्स तक जाना था और इस समय ट्रेफिक फुल होने की वजह से आधे घंटे से ज्यादा समय लगना निश्चित था इसलिए सूर्यान्श भीड़ के दबाव से बचने के लिए एक कोने में खड़ा हो गया और न जाने किन विचारों में खो गया। उसे लगा कि लोग ठीक कहते है "बड़े शहरों में जिसके पास एक घर और अपना वाहन है, वो राजा हे।"

पढ़ाई पूरी होने के बाद बसों में इस तरह की यात्रा सूर्याशं की जिन्दगी का एक हिस्सा बन गई थी। जहाँ एक ओर बस के अन्य यात्रियों की मजिंल होती थी, उनका कार्यालय या दुकान होती थी। वहीं सूर्याश की मंजिल रोज बदलती रहती थी। कभी ये दुकान, कभी वो दुकान, कभी ये आफिस तो कभी वो आफिस और तलाश थी एक अदद नौकरी की। माता-पिता की आर्थिक स्थिति ऐसी नहीं थी कि वो कुछ मदद कर सकते, एम.काम, में तो फीस भी इधर-उधर से जुटा कर भरनी पड़ी थी। बड़ी मुश्किल से तलाश कर उसने चार दुकानो पर एकाउटंस लिखने का काम लिया था। प्रत्येक दुकान से उसे चार-चार सौ रुपये प्रतिमाह मिल जाते थे, जिससे उसका निर्वाह हो जाता था। पक्की नौकरी ढूँढने के लिए भी थोड़ा समय बच जाता था।

बस के बशीरबाग पहुँचते ही, आफिस जाने वाले कई यात्री वहाँ उतर गये तो हवा का एक झौंका आया और सूर्यान्श ने राहत की साँस ली कि चलो अगला स्टाप गन फाउन्डरी और फिर अपनी मंजिल आबिड्स आते ही इस घुटन से छुटकार मिल जाएगा। लेकिन गन फाउन्डरी के पास बस रुकने के लिए जैसे ही धीमी हुई, एक यात्री चिल्लाया- "पकड़ो-पकड़ो पाकेट- मार को, मेरा पर्स उड़ा दिया।"

सूर्यान्श ने देखा हल्की हरी शर्ट में एक नौजवान धीमी बस से कूद कर भागा है। सूर्यान्श को जैसे ही बात समझ में आयी तो वह भी जल्दी से कूद के नौजवान पॉकेट-मार के पीछे भागा, मगर वह काफी तेजी से भाग रहा था। सूर्यान्श को पॉकेट-मार कुछ दूर तक तो दिखा मगर फिर गलियों में ओझल हो गया। सूर्यान्श असफल हो कर वापस आ गया।

सूर्यान्श पाकेट-मार को पकड़ तो नहीं सका, मगर एक मोड़ पर उसकी एक झलक जरुर देख ली थी। उसे लगा था कि हो ना हो ये उसके ही मोहल्ले में रहने वाला बेरोजगार

युवक रमेश कुमार ही है। रमेश को सही पहचानने का विश्वास उसे इसलिए भी था कि रमेश दो वर्ष तक उसी कालेज में था जिस से सूर्यान्श ने इन्टर किया था। रमेश इंटर करके बी.ए. के लिए दूसरे कॉलेज में चला गया था। बी.ए. करने के पश्चात भी दोनों कभी-कभी मिलते थे, इसी से सूर्यान्श को मालूम हुआ था कि रमेश भी बेरोजगार है। मगर पिछले पांच महीनों से दोनों की कोई मुलाकात नहीं हुई थी। बहुत विचार करने के बाद सूर्यान्श ने फैसला किया कि वो रमेश से मिलेगा जरुर।

दूसरे दिन सुबह-सुबह जब सूर्यान्श रमेश के कमरे पर पहुँचा तो वो शायद सो रहा था। दरवाजा खटखटाने पर कुछ देर बाद जब रमेश बाहर आया तो आँखें मल रहा था। सूर्यान्श को देख कर कुछ चौंका और बोला- "अरे सूर्यान्श आओ-आओ"

कमरे के भीतर फर्नीचर के नाम पर केवल एक स्टूल और एक पुरानी टेबल पड़ी थी, जिसके एक कोने पर स्टोब और चाय के बर्तन पड़े हुए थे और दूसरे कोने पर शराब की खाली बोतल और एक गिलास रखा हुआ था। बिस्तर जमींन पर ही लगा हुआ था। स्टूल खींच कर बैठते हुए सूर्यान्श बोला --

"बहुत दिन से तुमसे मुलाकात नहीं हुई थी, सोचा आज मिलता चलूँ। पार्ट टाइम नौकरी से काम चला रहा हूँ, तुम्हारी नजर में कोई काम हो तो बताना और तुम आजकल क्या कर रहे हो?"

"यार तुम्हारे पास पार्ट टाइम जोब तो है, यहाँ तो वो भी नहीं है,यों ही छोटे-मोटे काम करके गुजारा हो रहा है और तुम मुझ से नौकरी के लिए पूछ रहे हो। तुम्हें तो मालूम है नौकरी मिलना कितना मुश्किल है। नौकरी की तलाश में बहुत भटका मगर नहीं मिली इसलिए अब...

" पॉकेटमारी शुरु कर दी है" -बीच में ही बात काटते हुए सूर्यान्श बोला।

पहले तो रमेश सकपका गया फिर सम्हलते हुए बोला- "कैसी बात कर रहे हो सूर्यान्श, मैं और पॉकेटमार?"

"क्यों कल गनफउन्ड़री पर बस में पॉकेट मार कर कौन भागा था?"

ये सुनते ही रमेश ढ़ीला पड़ गया और सफाई देते हुए बोला- "यार करता तो क्या करता.. आखिर पेट को रोटी भी तो चाहिए।"

"और साथ में दारु भी" सूर्याशं फिर बीच में बात काटते हुए और शराब की बोतल की तरफ इशारा करते हुए बोला।

मगर इस के बाद रमेश ने कुछ तेज और व्यंग्यात्मक स्वर में जवाब दिया- "भूख क्या होती है, ये बात तुम नहीं समझोगे। रोटी ना मिलने पर आदमी की क्या हालत होती है, ये मैं जानता हूँ और फिर रोटी आदमी का मौलिक हक है, ना मिलने पर छीन कर खाना भी गलत नहीं है।"

"बात तो तुम अच्छी कर रहे हो मगर कभी ये तो सोचा होता कि लाखों घरों में, जिनमें हमारा तुम्हारा घर भी है, माँ खुद भूखी रह कर भी बच्चों का पेट पालती है, शायद इसी वजह से में और तुम आज जिंदा

हैं, नहीं तो बचपन में ही खतम हो गये होते। मैं आज के सब नेताओं की बात नहीं करता हूँ मगर इस देश में ऐसा नेता आज भी मौजूद है जिन्हे सरकार रोटी नहीं दूध मलाई देने को तैयार है मगर वो मानवाधिकार के लिए, पर्यावरण के लिए सबकी खुशी के लिए दो-दो महीने रोटी नहीं खाते, भूख हड़ताल करते हैं।...अच्छा ये बताओं रोटी पर पहले हक किसका है, मेरा या तुम्हारा ?"

"चूंकि मेरे पास काम नहीं है, इसलिए पहले मेरा" रमेश ने जवाब दिया।

तब सूर्यान्श बोला "रोटी पर तो हक बता रहे हो मगर ये कैसे भूल जाते हो, कॉलेज में जब मैं रात-रात भर बैठ कर किताबों से सर मारता था तो तुम पिक्चर हाल में श्री देवी का डांस देख रहे होते थे। मै जब ब्लैक बोर्ड पर आँखें लगाये होता था, तुम क्लास गोल कर बाहर आँखें सेक रहे होते थे।"

"ये सब फिलासफी पेट भरे लोगों की है, मैं तो इतना जानता हूँ कि रोटी मेरा मौलिक अधिकार है, जरुरत पड़ी तो छीन कर लूँगा। दूसरे भी तो औरों का हक मार रहे हैं।"

"वाह-वाह" सूर्यान्श ने ताली मारते हुए हुए कहा--" अच्छा है हुजुर तुम जज नहीं हो, वरना न्याय का तो बट्टा ही बैठ जाता। अच्छा एक बात बताओ, आज तुम्हारे बाजुओं में ताकत है, तुम बहुतों से छीन कर रोटी खा सकते हो लेकिन तुम्हारी जगह तुम्हारा छोटा भाई या बूढ़ा बाप हो तो वो क्या करेंगे, कैसे रोटी छीनेंगे?'"

"सब बातों का जवाब मेरे पास नहीं है।" रमेश बोला

"इसीलिए समझाने आया हूँ, अभी भी वक्त है वापस आ जाओ नहीं तो बरबाद हो जाओगे" ये बताते हुए सूर्यान्श रमेश को छोड़ कर बाहर आ गया, उसे लगा कि रमेश आसानी से मानने वाला नहीं है।

सूर्याश के जाते ही रमेश कमरा बंद कर के फिर लेट गया। रात मे देर से आया था और सुबह सूर्यान्श ने आकर जल्दी उठा दिया जिससे उसका सर भन्ना रहा था। सूर्यान्श की बातें सुनकर मूड पूरी तरह खराब हो चुका था। अचानक उसे याद आया कि माँ से मिलने नालगोंड़ा बहुत दिन से नहीं गया है, आज वहीं चला जाय। सौभाग्य से उसे जाते ही बस मिल गई और वो एक घंटे बाद नालगोंड़ा पहुँच गया।

बस से उतर कर जैसे ही उसने बाहर जाने के लिए कदम उठाया, उसकी नजर लगभग तीस वर्षीय एक आदमी पर पड़ी जो टिकट खरीद रहा था। रमेश को उसके हाथ में काफी रुपये दिखे और पैसे देखते ही उसकी नीयत बदल गई। वह माँ से मिलने के बजाय वापस हैदराबाद वाली बस में उस यात्री के पीछे वाली सीट पर बैठ गया। रास्ते में मौका मिलते ही रमेश ने उसकी जेब काट ली और अगले ही स्टॉप पर उतर गया।

उतर कर पैसे गिने तो पूरे 1800/रुपए थे, उसका चहरा खिल उठा। उसने सोचा माँ से तो दो दिन बाद भी मिल सकता हूँ, पहले ये जो रुपये हाथ आये है इससे जीवन का आनन्द लिया जाए। ये विचार आते ही उसने पीछे जाने वाली बस पकड़ी और वापस हैदराबाद पहुँच गया ।

हैदराबाद पहुँच कर रमेश ने अपनी एक गर्ल फ्रेंड को पकड़ा और पाकेट मारी के पैसों को ठिकाने लगाने निकल पड़ा। तीन दिन तक रमेश ने होटलों में खूब अच्छा खाया, दारु पी, कई फिल्मे देखी और गर्ल फ्रेंड के साथ का मजा लूटा। तीन दिन बाद जब जेब में केवल सौ रुपये ही रह गये तो वो जमीन पे आया और माँ से मिलने फिर एक बार नलगोंडा अपने गाँव की और चल दिया। जब वह घर पहुँचा तो घर पर ताला पड़ा हुआ था। ये सोच कर कि माँ शायद बहन के घर गई होगी, वो बहन के घर की तरफ चल दिया। मगर बहन के घर पहुँचा तो उसके पैरों तले जमीन खिसक गई। बहन जीजाजी तथा अन्य रिश्तेदार सफेद कपड़े पहने हुए मातम मना रहे थे, एक कोने में माँ की पुरानी तस्वीर रखी हुई थी और उस पर फूल माला चढ़ी हुई थी। बगल में जल रही अगरबती की महक चारों और फैल रही थी। उसके पहुँचते ही सब उसे शक की नजरों से देखने लगे।

ये सब देख कर उस के चेहरे का रंग उड़ गया, उसे ऐसा लगा जैसे वह मीलों से पैदल चल कर आ रहा है। बहन के पास जाकर उसने पूछा--

"ये कैसे हुआ?... कब हुआ?"

"परसों शाम" बहन ने जवाब दिया और उसका हाथ पकड़ कर अंदर ले जाकर पूछने लगी--

"तुम कहाँ थे, तुम्हारे कमरे पर आदमी भेजा था मगर तुम रात एक बजे तक नहीं आए तो आदमी वापस आ गया।"

"मै एक दोस्त के साथ था" रमेश ने सफाई दी और अन्य लोगों के बीच आकर बैठ गया, उसे दुख था कि अन्तिम समय में वो माँ के पास नहीं था।

शाम को जब सारे लोग विदा हो गये तो रमेश ने खाना खाते हुए अपने जीजा से पूछा-"अचानक ये सब कैसे हो गया?" तब जीजा ने बताया--

"चार दिन पहले अचानक माँ की हालत बहुत बिगड़ गई थी। डाक्टर को दिखाया पर उसने जो दवाई लिखी वो यहाँ नही मिल रही थी इसलिए मैने हैदराबाद जा रहे अपने एक मित्र को आठ सौ रुपये देकर दवाई लाने को कहा, मगर दुर्भाग्य देखो रास्ते में किसी ने उसकी जेब काट ली और हमारे आठ सौ रुपयो के साथ-साथ उसके भी एक हजार रुपये चले गये... दवाई समय पर ना आने के कारण माँ को नहीं बचाया जा सका।"

ये बात सुनते ही रमेश के हाथ का कौर हाथ में ही रह गया। जीजा ने जब पूछा- "क्या हुआ, खाना क्यों रोक दिया?"

"अब मन नहीं है, पेट भर गया" कह कर वो खाने से उठ गया और सीधे अपने बिस्तर पर जाकर लेट गया।

बिस्तर पर रमेश लेट तो गया, मगर नींद आज की रात उसके नसीब में नहीं थी। आत्मग्लानि से भरा वो

रात भर बिस्तर पर पड़ा रोता रहा, उसे बार-बार सूर्यान्श की कही हुई बात याद आ रही थी कि- "देखो रमेश रोटी के हक के नाम पर तुमने जेब तो काट ली, मगर ये नहीं सोचा कि बस में कोई लखपति,करोड़पति नहीं चलते। तुम ये कैसे जान सकते हो कि जो जेब तुमने काटी, उसका पैसा तुम्हारे लिए ज्यादा जरुरी था या उस जेब वाले के लिए। तुम्हारे लिए तो ये केवल रोटी का सवाल है मगर उसके लिये हो सकता है ये किसी की जीवन -मृत्यु या बेटी की इज्जत का सवाल हो।"

दूसरे दिन भारी मन से रमेश ने बहन से विदा ली और हैदराबाद वापस चल दिया। अपने कमरे तक पहुँचते-पहुँचते उसे रात हो गई। उसने मुँह-हाथ धोए, कपड़े बदले और खाने के लिए होटल की और चल दिया। होटल से खाना खाकर रमेश जब बाहर निकला तो रात के दस बज रहे थे, वो सीधा सूर्यान्श के कमरे की और चल दिया। सूर्यान्श उस समय किसी आवेदन पत्र को लिखने में व्यस्त था, रमेश को देखा तो चौंक गया, फिर उठ कर कुर्सी पर बैठाया। पहले दोनो ने चाय पी फिर जब सूर्यान्श ने पूछा--

"बताओं कैसे आना हुआ? क्या मेरी बात तुम्हारी समझ में आई?" तो रमेश अपने को रोक नहीं पाया और फफक कर रो पड़ा। रोते-रोते ही उसने पूरी बात सूर्यान्श को बताई।

पूरी बात सुनने के बाद सूर्यान्श ने रमेश को सांत्वना दी और बोला- "जो होना था हो गया लेकिन माँ जाते-जाते भी तुम्हारा भला कर गई। अपनी मौत से तुम्हें सबक दे गई। अब ईश्वर का नाम लेकर नयी जिन्दगी शुरु करो।"

इस पर रमेश बोला- "मैं भी कल से तुम्हारे साथ नौकरी की तलाश पर निकलूँगा, अगर तुम्हें कोई एतराज ना हो तो।"

"नहीं-नहीं, मुझे कोई परेशानी नहीं है, कल से मेरे साथ चलो और हाँ, मै जहाँ एकाउन्टस लिखता हूँ उसमें से एक दुकान पर एक सेल्समैन की नौकरी खाली है। तनख्वाह केवल एक हजार रुपये ही है, मगर मैं समझता हूँ फिलहाल इतने से तुम्हारा काम चल जाएगा। इसलिए चाहो तो ये नौकरी तुम्हे मिल सकती है।" सूर्यान्श ने कहा

सुनते ही रमेश प्रसन्न हो गया और तुरन्त बोला- "इससे अच्छी कोई बात नहीं हो सकती है, अगर ये नौकरी तुम दिला दो तो तुम्हारी मेहरबानी होगी।"

दूसरे दिन जब सूर्यान्श अबिड्स से बस स्टाप पर उतरा तो रमेश भी उसके साथ था। रमेश को सेल्समैन की नौकरी मिल गई। दिन भर रमेश दुकान पर अपना काम करता रहा और सूर्यान्श अलग -अलग दुकानों पर जाकर अपना काम निपटाता रहा। बाजार बंद होने के बाद दोनो साथ ही वापस लौटे। पहले सूर्यान्श का कमरा पड़ता था। वहाँ पहुँच कर जब रमेश ने विदा लेनी चाही तो सूर्यान्श ने कहा--

"मैं खाना यहीं बना कर खाता हूँ, आज मेरे हाथ का खाना खा कर देखो।" सूर्यान्श के बहुत आग्रह करने पर रमेश खाना खाकर उस रात वहीं सो गया। उस रात बिस्तर पर लेट कर उसे ये एहसास हुआ कि दूसरों को दुख देकर अपना दुख कम नहीं होता, उसे कम करने के लिए मिलजुल कर बांटना जरूरी है।